International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 8, August 2018
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

हिंदी आलोचना में डॉ रामविलास शर्मा का योगदान

डॉ शिवदयाल पटेल, सहायक प्राध्यापक हिंदी
शासकीय महाविद्यालय बरपाली, जिला कोरबा, छत्तीसगढ़
मो. नं. 9669128900
ईमेल आईडी patelshivdayal1@gmail.com

डा0 रामविलास शर्माः जीवन और व्यक्तित्व :

डा० रामविलास शर्मा हिन्दी के प्रतिष्ठित मार्क्सवादी आलोचक हैं। उन्होंने अपनी व्यावहारिक और सैद्धान्तिक आलोचना के द्वारा हिन्दी की महान प्रगतिशील परम्परा का उद्घाटन किया है। डा0 रामविलास शर्मा का जन्म 10 अक्टूबर, 1912 को उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिला स्थित एक गाँव "उँचगाँव सानी' में हुआ था। इनके पिता का नाम गयादीन शर्मा था। ये अपने माता-पिता की तीसरी सन्तान थे। इनके पाँच भाई एवं एक बहन थी। इनका विवाह 14 वर्ष की आयु में 1926 में लखनऊ जिला के गाँव जबरौली में कैलास के साथ हुआ था। सन्तान के रूप में इनके तीन पुत्र एवं तीन पुत्रियाँ है। डा0 शर्मा का बचपन प्रायः गाँव में ही व्यतीत हुआ। यहाँ पर आरम्भ से ही इनके व्यक्तित्व पर इनके बाबा लालता प्रसाद का विशेष प्रभाव रहा, जो एक अवकाश प्राप्त फौजी थे। डा0 शर्मा ने अपने बचपन की स्मृतियों का उल्लेख करते हुए बाबा के स्नेहमय व्यवहार के सम्बन्ध में अपनी आत्मकथा 'अपनी धरती अपने लोग' में लिखा है- "बाबा अपनी मजबूत उँगलियों से बहुत हल्के-हल्के मेरी आखों का कीचड़ छुडाते थे। उस समय मेरी आयु दो ढाई साल की रही होगी। उनके कंधों पर बैठकर मैं गाँव घूमता था और वहाँ के दृश्य देखता था।' चूंकि डा0 शर्मा के गाँव में कोई स्कूल नहीं था, अत: आरम्भिक शिक्षा भी बाबा के साहित्य में प्राप्त हुई- "हमारे गांव में कोई स्कूल नहीं था। बचपन में शिक्षा बाबा के सानिध्य में रहकर मिली थी। उन्होंने गिनती, पहाड़ा, हिन्दी लिखना पढ़ना सिखाया था। इसके अलावा बहुत बड़ी बात यह है कि मैं उनसे कहानियाँ सुनता था और उन्हें

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

बहुत तरह की कविताएँ याद थी। कुछ कविताएँ तो साहित्य की पुस्तकों में मिल जायेंगी। लेकिन कुछ ऐसी कविताएँ थी जो कहानियों के बीच में आती थी या कुण्डलियों के बिना कुछ लोगों के बारे में प्रचलित थी। बचपन में मुझ पर इन सबका बहुत असर हुआ।" डा0 शर्मा के पिता झाँसी में नौकरी पर थे। अत: छः सात वर्ष की आयु में इन्हें पिता के पास पढ़ने झाँसी भेज दिया गया। यहीं पर इण्टरमीडिएट तक की शिक्षा हुई और इनके व्यक्तित्व के निर्माण में यहाँ का भी विशेष महत्व है। यहाँ पर अध्ययन करते हुए ये तीन अध्यापकों से विशेष रूप से प्रभावित हुए। सरस्वती पाठशाला झाँसी के मास्टर रूद्र नारायण उनके चौथी और पाँचवीं कक्षा के गुरू थे। रूद्रनारायण जी कलाकार थे और उन्हें चित्र बनाने का शौक था। वे क्रान्तिकारियों से मित्रता भी रखते थे तथा चन्द्रशेखर आजाद इनके मित्र थे। आजाद की मूंछों वाला चित्र इन्हीं का बनाया हुआ है। इनसे डा0 शर्मा के अन्दर देश भक्ति का बीज रोपण हुआ। इनके सम्बन्ध में डा0 शर्मा ने अपनी आत्मकथा में लिखा है- "स्वाधीनता आन्दोलन के दिनों में सरस्वती पाठशाला का रूप बिल्कुल बदल गया। छात्रों एवं अध्यापकों के सम्बन्ध एकदम बदल गया। उस समय अध्यापकों से मेरा सम्पर्क बहुत दिनों तक बना रहा। उन्हीं में मास्टर रूद्रनारायण थे जो चन्द्रशेखर आजाद के मित्रों में थे। उन्होंने मुझे कलाई पंजा लडाने के अलावा मूर्तियाँ बनाना, चित्र बनाना भी सिखाया। कुछ दिनों बाद आर्थिक कारणों से सरस्वती पाठशाला का स्कूल बन्द हो गया और वहां के अधिकांश अध्यापक मैकडानल हाईस्कूल आ गये। इसके साथ ही डा0 शर्मा भी इसी स्कूल में आ गये। छठी से दसवीं तक इनकी पढ़ाई यहीं हुई। यहाँ पर प्रफुल्ल कुमार चटर्जी ने इन्हें अंग्रेजी पढ़ाया। चटर्जी कलाप्रेमी, बंग्ला के लेखक, चित्रकार और सहृदय व्यक्ति थे। स्पोर्ट्स तथा लेखन दोनों में ही उनकी रूचि थी। उनके सभी गुणों का प्रभाव डा0 शर्मा पर पड़ा। डा0 शर्मा ने अपनी आत्मकथा में इनके सम्बन्ध में लिखा है- "हमारे स्कूल में इतिहास के कुछ अध्यापक ऐसे थे जो अंग्रेजी राज में प्रगतिशील भूमिका में विश्वास करते थे। इसके विपरीत चटर्जी मास्टर साहब अंग्रेजी राज के खरे आलोचक थे। तीसरे अध्यापक पं0 ब्रजभूषण त्रिपाठी थे। त्रिपाठी जी कुशल अध्यापक, हिन्दी के अच्छे कवि तथा नाटककार थे। डा0 शर्मा को इनसे साहित्य प्रेम, कवित्व क्षमता तथा अध्यापकीय कौशल अर्जित करने की प्रेरणा प्राप्त हुई। इन सभी अध्यापकों के प्रभाव से एक ऐसे देशभक्ति, मातृभाषा हिन्दी के प्रति अतिशय अनुराग, ज्ञानार्जन की अदम्य पिपासा, समाज एवं एकता के आधार पर समाज के पुनर्निमाण की अभिलाषा और साहित्यिक अभिरूचि निरन्तर विकसित होती गयी। उच्च शिक्षा के लिए डा० शर्मा लखनऊ आये और सन् 1932 में लखनऊ विश्वविद्यालय से बी०ए० किया। यहीं से 1934 ई0 में अंग्रेजी साहित्य से एम०ए० किया। इसके पश्चात प्रो0 एन0के0 सिद्धान्त के निर्देशन में 'प्री रैफेलाइटस एण्ड

कीट्स' विषय पर शोध कार्य आरम्भ किया, जो 1938 में पूर्ण हुआ तथा 1940 में इन्हें पी0-एच0 डी0 की उपाधि प्राप्त हुई। 1938 से ही इन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय में अध्यापन आरम्भ कर दिया था। उल्लेखनीय है कि डा0 शर्मा लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में पी0एच0डी0 करने वाले प्रथम छात्र थे। अध्ययन की इस अवधि में अपने बड़े भाई भगवानदीन शर्मा से निरन्तर, स्नेह, सहयोग मिलता रहा। लखनऊ प्रवास के समय डा0 शर्मा की झाँसी में प्राप्त राजनीतिक चेतना में और भी निखार आया। सन् 1932 के लगभग लखनऊ स्वाधीनता आन्दोलन का केन्द्र बना हुआ था। नगर तथा विश्वविद्यालय में देश भक्ति की लहर थी। राजनीतिक दृष्टि सम्पन्न युवक उन दिनों मार्क्सवाद की ओर आकर्षित हो रहे थे। शोषण विरोधी तथा समतामूलक साम्यवाद युवा वर्ग के लिए महान आकर्षण का केन्द्र था। डा0 शर्मा भी इस ओर आकर्षित हुए। यहीं पर मजदूर वर्ग की निराला जी का सानिध्य भी इन्हें प्राप्त हुआ। वस्तुतः उस समय 'निराला जी को घेरकर नवयुवक साहित्यकारों की जो सजग पीढ़ी उठ रही थी उसमें डा0 शर्मा केन्द्र में था। निराला जी और डा0 शर्मा के सम्बन्ध में यह कहना अधिक उचित होगा कि सम्भवतः डा0 शर्मा निरालाजी के पीछे उतने नहीं लगे जितने स्वयं निराला जी इनके पीछे लगे इसका प्रमुख कारण यह था कि उन दिनों निराला जी के साथ बहुत से ऐसे लोग थे जिनको सुनाकर वे घण्टों भाषण कर सकते थे, लेकिन कोई ऐसा भी चाहिए था, जो उन्हें भीतर से भरता रहे, अंग्रेजी साहित्य के ग्रन्थ देता रहे, इलियट की कविताओं का राज समझाता रहे और उनकी रचनाओं का प्रशंसक नहीं उनकी रचनाओं का खरा आलोचक भी हो। यह सब गुण डा0 शर्मा मे विद्यमान थे। अतः कहा जा सकता है कि यह काल केवल निराला जी के लिए ही तपस्या और सर्वश्रेष्ठ लेखन का काल नहीं था, अपितु डा0 शर्मा के तप, प्रेरणा तथा प्रगतिशील चिन्तन के निर्माण एवं उत्कर्ष का काल था। मार्क्सवादी दर्शन के विधिवत अध्ययन का समय इन्हें 1938 के पश्चात् उपलब्ध हुआ था।

डा0 शर्मा का नियमित लेखन भी यहीं से आरम्भ हुआ। इनकी प्रथम कविता 'बसन्त स्वप्न' नाम से 'विश्वामित्र' में प्रकाशित हुई। इनका प्रथम गद्य लेखन "निराला जी की कविता' सन् 1934 में चाँद में प्रकाशित हुआ। इन्होंने 'हंस' के कविता विभाग का सम्पादन भी कुछ समय तक किया था। इसके अतिरिक्त 'चाँद', 'माधुरी' तथा 'प्रभा' नामक पत्रिकाओं में इनकी अनेक पत्रिकायें तथा लेख प्रकाशित हुए। श्री अमृतलाल नागर की व्यंग्य प्रधान पत्र 'चकल्लस' में इनकी अनेक व्यंगात्मक कविताएं- प्रकाशित हुई थी। इनके अब तक के लेखन कार्यों के फलस्वरूप इनकी गणना महत्वपूर्ण लेखकों में होने लगी थी।वस्तुतः डा0 शर्मा प्रेमचन्द के पश्चात हिन्दी के प्रगतिशील लेखन तथा आन्दोलन में उत्पन्न होने वाली एक प्रकार

की रिक्तता को अपने लेखन से भरने के लिए प्रयत्नशील थे। अतः इन्हें 'प्रगतिशील लेखक संघ का मंत्री बनाया गया। यह इनकी परीक्षा का काल था और आज यह स्पष्ट हो गया है कि डा0 शर्मा इस परीक्षा में सफल हुए। इस पद पर इन्होंने 1948 तक कार्य किया। इसी अवधि में 1943 में ये प्रगतिशील लेखक संघ के सम्मेलन में भाग लेने बम्बई गये, जहाँ इन्होंने कम्युनिष्ट पार्टी की विधिवत सदस्यता भी ग्रहण कर ली। इन्हें 1949 में 'प्रगतिशील लेखक संघ का मंत्री बनाया गया, जिस पद पर उन्होंने 1953 तक कार्य किया। 1943 में ही डा0 शर्मा ने अपने गुरू प्रो० सिद्धान्त के आदेश पर अनिच्छापूर्वक आगरा के बलवंत राजपूत कालेज में अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष होकर आ गये थे। यहाँ पर उन्होंने 1971 ई0 तक कार्य किया। 1971 ई0 में कुलपति के अनुरोध पर आगरा विश्वविद्यालय के ही अन्तर्गत कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी विद्यापीठ में निदेशक के रूप में आ गये, जहाँ से 1974 में अवकाश ग्रहण किया। उसके बाद से स्थायी रूप से नई दिल्ली में रहते हुए महान साधक की भांति साहित्य साधना में संलग्न रहे। नई दिल्ली में रहते हुए ही डा0 शर्मा की पत्नी का 1983 में हृदयगति रुकने से देहान्त हुआ। डा0 शर्मा के आलोचनात्मक लेखन का अधिकांश कार्य आगरा में ही सम्पन्न हुआ। यहीं पर प्रेमचन्द, भारतेन्दु, निराला, आचार्य शुक्ल, महावीर प्रसाद द्विवेदी पर तथा भाषा-विज्ञान पर उनका श्रेष्ठ लेखन हुआ। आगरा में रहते हुए ही इन्होंने कुछ दिनों तक 'समालोचना' पत्र का सम्पादन भी किया। 1950 में इन्हें चेकोस्लोवाकिया तथा सोवियत संघ की यात्रा का निमंत्रण मिला, लेकिन सरकार से अनुमति न मिलने के कारण नहीं जा सके। अतः इन्होंने भारत भ्रमण का निर्णय लिया और कश्मीर, शान्ति निकेतन, हैदराबाद, कन्या कुमारी, वनस्थली, उज्जैन, नागपुर आदि का भ्रमण करते हुए देश की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विरासत का निकट से साक्षात्कार किया। अब तक इन्हें अनेक महत्वपूर्ण साहित्यिक पुरस्कार भी प्राप्त हो चुके है। 'निराला की साहित्य साधना' (एक) पर 'साहित्य आकादमी पुरस्कार', 1988 में हिन्दी अकादमी दिल्ली द्वारा 51 हजार रूपये का शलाका पुरुष सम्मान, 1990 में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा 1 लाख, पचास हजार रूपये का 'भारत-भारती सम्मान' तथा 1991 में के0 के0 बिडला फाउण्डेशन ने एक लाख पचास हजार रुपये का 'सरस्वती सम्मान' भी दिया है एवं 'सोवियत भूमि पुरस्कार' भी इन्हें प्रदान किया गया है।

डॉ० रामविलास शर्मा के कृतित्व का सामान्य परिचय -

डॉ० रामविलास शर्मा हिन्दी के प्रख्यात मार्क्सवादी समीक्षक,

विचारक, भाषाविद् एवं कवि थे। उनकी लगभग दो दर्जन कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं। उन्होंने हिन्दी साहित्य की विकास–परम्परा का सतर्क सूक्ष्म और विवेकपूर्ण मूल्यांकन करते हुए उसमें निहित प्रगतिशील एवं प्रतिक्रियावादी तत्वों को भली-भाँति पहचाना है और पूरी शक्ति एवं आत्मविश्वास के साथ उन्हें प्रस्तुत किया है। डॉ० शर्मा के कृतित्व की श्लाघ्य और श्रेष्ठ अभिव्यक्ति आधुनिक युग के युग-निर्माता साहित्यकारों के मूल्यांकन में हुई है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचन्द, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और निराला आधुनिक हिन्दी साहित्य की वे श्रेष्ठ प्रतिभाएँ हैं, जिन्होंने अपना सर्वस्व देकर हिन्दी को समृद्ध किया है। इनका कृतित्व हिन्दी की उपलब्धि है। डॉ० शर्मा ने इन्हीं को केन्द्र में रखकर आधुनिक हिन्दी साहित्य को गतिशील, स्वस्थ एवं जनवादी चेतना को परखने की चेष्टा की है। प्रेमचन्द (1941ई०), भारतेन्दु युग (1943 ई०), निराला (1946 ई०), प्रगति और परम्परा (1949 ई०). साहित्य और संस्कृति (1949 ई०), प्रेमचन्द और उनका युग (1952 ई०), भारतेन्दु हरिश्चन्द (1953 ई०), भाषा, साहित्य और संस्कृति (1954 ई०), प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ (1954 ई०), आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' और हिन्दी आलोचना (1955 ई०), लोकजीवन और साहित्य (1955 ई०), स्वाधीनता और राष्ट्रीयता साहित्य (1956 ई०), आस्था और सौन्दर्य (1961 ई०), भाषा और समाज (1961 ई०), साहित्य स्थायी मूल्य और मूल्यांकन (1968 ई०), निराला की साहित्य साधना प्र०सं० (1969 ई०), निराला की साहित्य साधना द्वि०सं० (1972 ई०), भारतेन्दु युग और हिन्दी साहित्य की विकास परम्परा (1975 ई०), निराला की साहित्य साधना तृ०सं० (1976 ई०), महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण (1977 ई०), नयी कविता और अस्तित्ववाद (1978 ई०), भारत के प्राचीन भाषा-परिवार और हिन्दी (तीन खण्ड- 1979, 1980 एवं 1981 ई०), परम्परा और मूल्यांकन (1981 ई०), भाषा युग बोध और कविता (1981 ई०), भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्स वाद (दो खण्ड 1982 ई०), कथा विवेचना और गद्य शिल्प (1982 ई०), मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य (1984 ई०), लोक जागरण और हिन्दी साहित्य (1985 ई०), सम्पादित, हिन्दी जाति का साहित्य (1986 ई०), भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ (1966 ई०), मार्क्स और पिछड़े हुए समाज (1986 ई०) आदि कृतियाँ प्रकाशित। डॉ० रामविलास शर्मा ने 'मानव सभ्यता का विकास और अट्ठारह सौ सत्तावन की राज्य क्रान्ति जैसी समाजशास्त्र और इतिहास से सम्बद्ध पुस्तकें भी लिखी हैं। समय-समय पर इन्होंने रेखाचित्र, संस्मरण, डायरी और पत्र आदि भी लिखते रहे हैं। इनका संग्रह 'पंचरत्न' (1980) नाम से प्रकाशित है। 'घर की बात' (1983) शीर्षक से शर्मा जी ने अपने परिवार का लगभग सौ वर्षों का इतिहास भी प्रस्तुत किया है। आत्मकथा लेखन के क्षेत्र में यह एक सर्वथा नवीन प्रयोग है।

हिंदी आलोचना में डा0 रामविलास शर्मा का योगदान

डा० राम विलास शर्मा हिन्दी के प्रखर मार्क्सवादी आलोचक है। उन्होंने अपने आलोचना सिद्धान्तों का निर्माण-मार्क्सवाद साहित्य सिद्धान्तों के अनुरूप ही किया है। इसीलिए ऐतिहासिक द्वन्द्वात्मक पद्धति उनकी आलोचना की सर्वप्रमुख विशेषता है।

आलोचना सिद्धान्ता का निमाण-माक्सवाद साहित्य सिद्धान्त के अनुरूप ही किया है। मार्क्सवादी साहित्य सिद्धान्तों के प्रति अपूर्व निष्ठा रखने के कारण ही उनकी गणना कठोर मार्क्सवादी (हाई मार्किसस्ट) आलोचक के रूप में की जाती है।

हिंदी आलोचना में रामविलास शर्मा की आलोचना पद्धति 'प्रगतिवादी समीक्षा' के आधार स्तंभ के रूप में स्वीकार की गई है। उनकी आलोचना का क्षेत्र न केवल विषय की दृष्टि से बल्कि कार्य की दृष्टि से भी अत्यधिक विस्तृत है। उन्होंने हिंदी आलोचना की चर्चा करते हुए संस्कृत और अंग्रेजी साहित्य, भाषा विज्ञान, इतिहास, मार्क्सवाद, उपनिवेशवाद, समाजशास्त्र और दर्शनशास्त्र जैसे विषयों पर गहराई से विचार किया है। उनकी आलोचना का काल भी प्रायः 1934 (निराला जी की कविता) से शुरु होकर 2000 ई. (भारतीय संस्कृति और हिंदी प्रदेश) तक लगभग सात दशकों में विस्तृत है। इस रूप में समय के साथ-साथ कुछ बाहरी परिवर्तन तो उनकी आलोचना में दिखाई देते हैं पर जैसा कि उन्होंने खुद कहा है कि उनका दृष्टिकोण तो मूलतः एक ही है जो समय के साथ-साथ कुछ बदल गया है। उन्हें आलोचकों में रामचंद्र शुक्ल (आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना), उपन्यासकारों में प्रेमचंद (प्रेमचंद और उनका युग) तथा कवियों में निराला (निराला की साहित्य साधना) सर्वाधिक प्रिय हैं।

किसी आलोचक का मूल्यांकन मूलतः उस दृष्टिकोण का मूल्यांकन होता है जिसे वह अपनी कृतियों में धारण करता है। इस दृष्टिकोण से देखें तो डॉ. शर्मा मूलतः एक मार्क्सवादी रचनाकार हैं, किंतु उन्होंने अपने सृजनात्मक विवेक से मार्क्सवाद का एक प्रगतिशील संस्करण तैयार किया है। इनके लिए प्रगतिशीलता किसी भी परंपरा का सकारात्मक निषेध है। उन्होंने अपनी पुस्तक 'भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद' में

स्पष्ट किया है कि जिस प्रकार लेनिन आदि दार्शनिकों ने मार्क्सवाद को परिस्थितियों के अनुकूल बनाया है वैसे ही भारत की स्थितियों को ध्यान में रखते हुए मार्क्सवाद में आवश्यक परिवर्तन किए जा सकते हैं।

डॉ. शर्मा न केवल मार्क्सवाद में संशोधन की बात करते हैं बल्कि करके दिखाते भी हैं। वे सिद्ध करते हैं कि मार्क्स द्वारा विश्लेषित औद्योगिक पूंजीवाद चाहे इंग्लैंड में पहले आया हो किंतु पूंजीवाद का एक और प्रकार व्यापारिक पूंजीवाद 12वीं-13वीं शताब्दी में ही आ चुका था। मार्क्स ने पूंजी या उत्पादन प्रणाली को 'आधार' तथा शेष सामाजिक पक्षों को 'अधिरचना' माना था तथा आधार में परिवर्तन से अधिरचना की स्थिति को प्रभावित माना था। रामविलास जी इस बात से पूरी तरह सहमत नहीं हैं, क्योंकि पुरानी अधिरचना के तत्व लिए बिना नई अधिरचना नहीं बन सकती। वे आर्थिक कारणों के साथ-साथ सामाजिक कारणों को भी महत्व देते हैं। क्रांति में मजदूरों के साथ किसानों की भूमिका को भी स्वीकार करते हैं, इस प्रकार मार्क्सवाद का एक नया संस्करण तैयार करते हैं।

साहित्य के संबंध में भी उनकी प्रमुख मान्यताएँ या तो मौलिक हैं या सामाान्य प्रगतिवादियों से अलग हैं। सबसे पहले वे 'सौंदर्य की वस्तुगत सत्ता और सामाजिक विकास' नामक निबंध में सौंदर्य को केवल व्यक्ति या विषय में नियत करने के स्थान पर दोनों की अंतर्क्रिया के रूप में देखते हैं। वे साहित्य को भाषा, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, समाज और भौगोलिक परिवेश से बनने वाली जातीयता (Nationality) से जोड़कर देखते हैं। उर्वशी की समीक्षा करते हुए प्रगतिशील आंदोलन के लोकवादी स्वरूप के भीतर रस सिद्धांत को स्वीकार कर लेते हैं। निराला की महानता को स्पष्ट करते हुए उनकी जन्मजात प्रतिभा को स्वीकार करते हैं और प्रगतिशील आंदोलन में प्रेम की संभावना को घोषित रूप से स्वीकृति देते हुए कहते हैं - "प्रेम और प्रगतिशील विचारधारा में कोई आंतरिक विरोध नहीं लेकिन स्वामी विवेकानंद से प्रभावित होेने वाले क्रांतिकारी यह समझते आए थे कि क्रांति और ब्रह्मचर्य का अटूट संबंध है जैसे आजकल के बहुत से कवि और कहानीकार समझते हैं कि आधुनिकता बोध का अटूट संबंध परकीया प्रेम से है।" इसी सृजनात्मक शक्ति का परिणाम है कि वे अपनी प्रगतिशीलता में वाल्मीकि, कालिदास और भवभूति के साहित्य का सूक्ष्म विश्लेषण कर पाते हैं।

रामविलास जी की व्यावहारिक आलोचना का प्रस्थान बिंदु रामचंद्र शुक्ल हैं। उन्होंने उस समय के आलोचकों द्वारा शुक्ल जी की आलोचना का खंडन करने की प्रवृत्ति को देखते हुए उनके महत्व को वैसे ही स्थापित किया जैसे उपन्यासकार के तौर पर प्रेमचंद और कवियों के रूप में निराला को। उनका मानना था

कि शुक्ल जी ने आलोचना के माध्यम से उसी सामंती संस्कृति का विरोध किया जिसका उपन्यास के माध्यम से प्रेमचंद और कविता के माध्यम से निराला ने। उन्होंने शुक्ल जी के छायावाद संबंधी मत को समझाते हुए तर्क दिया कि वे नएपन के नहीं बल्कि अगोचरता, परोक्षता तथा लाक्षणिकता के विरुद्ध थे। अगर ऐसा न होता तो वे प्रसाद की लोकपक्ष समन्वित कविता तथा पंत की प्राकृतिक रहस्य भावना का समर्थन न करते। रीति काव्य के संबंध में उन्होंने डॉ. नगेन्द्र के मत का खंडन करते हुए शुक्ल जी के मत की पुनः प्रतिष्ठा की तथा संत साहित्य की समीक्षा में शुक्ल जी के अधूरे कार्य को पूरा करते हुए उसके महत्व का उल्लेख किया।

रामविलास शर्मा की साहित्यिक आलोचना का महत्वपूर्ण बिंदु निराला की साहित्य साधना है, जो कि वस्तुतः रामविलास जी की ही साहित्य साधना है। इस रचना के पहले खंड में उन्होंने निराला के व्यक्तित्व तथा उनकी निर्माणकारी परिस्थितियों की समीक्षा की है। यह हिंदी समीक्षा का वह दुर्लभ बिंदु है जहाँ व्यक्तित्व और कृतित्व अलग-अलग न रहकर एक दूसरे में घुल मिल जाएं। निराला हिंदी में प्रायः शक्ति, ऊर्जा तथा ओज के रचनाकार माने गए हैं किंतु डॉ. शर्मा ने उनके साहित्य का गहरा विश्लेषण करते हुए करुणा को उसके मूल भाव के रूप में प्रतिष्ठित किया तथा उन्हें पश्चिम की महान ट्रेजडी लेखन की परंपरा से संबद्ध किया। इतना ही नहीं उन्होंने निराला-साहित्य के कला पक्ष का भी विस्तृत अध्ययन किया। ट्रैजिक सेंस की दृष्टि से वाल्मीकि, भवभूति तथा तुलसी से और समग्रता की दृष्टि से टैगोर, तुलसी और सूर से निराला की तुलना और मूल्यांकन किया है।

रामविलास जी ने उन रचनाकारों के महत्व की स्थापना की जो किसी न किसी रूप में साहित्य की जनवादी परंपरा से जुड़े हुए थे। ऐसे रचनाकारों में प्रेमचंद का नाम अग्रगण्य है। उनके 'सेवासदन' को डॉ. शर्मा ने नारी पराधीनता को उजागर करने वाला उपन्यास तो गोदान को ग्रामीण और शहरी कथाओं को मेहनत और मुनाफे की दुनिया का अंतर बताने वाला माना। इसके अतिरिक्त 'भारतेंदु हरिश्चंद्र और हिंदी नवजागरण की समस्याएँ' में भारतेंदु तथा उनके युगीन लेखकों के महत्व का अंकन किया तथा 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण' में नवजागरण के संदर्भ में द्विवेदी जी के आर्थिक-सामाजिक व अन्य विषयों के विश्लेषण को महत्व प्रदान किया।

रामविलास शर्मा की एक सीमा यह है कि वे जिस रचनाकार को पसंद नहीं करते उसके प्रति विध्वंसात्मक रवैया अपना लेते हैं। उनकी आलोचना इस बात को भी लेकर की जाती है कि वे पहले अपना शत्रु तय कर लेते

हैं फिर उसके विचारों को पढ़कर तथा संभावित विचारों की कल्पना करके आक्रामक शैली में आलोचना लिखते हैं। इस दृष्टि से पंत की 'स्वर्ण किरण' और 'स्वर्ण धूलि' की समीक्षाएँ महत्वपूर्ण हैं। अज्ञेय और मुक्तिबोध के प्रति 'नई कविता और अस्तित्ववाद' में व्यक्त उनके विचार भी इसी पूर्वग्रह का परिणाम कहे जा सकते हैं। हालांकि ध्वंसात्मक भंगिमा रखते हुए भी वे आलोचकों को चुनौती देते हैं कि जो बातें मुझसे छूट गई हों, उन्हें प्रकाश में लाइए और जो बातें मैंने गलत कहीं हों उनका तर्कपूर्ण खंडन करिए ('मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य' में व्यक्त विचार)। उनकी इस चुनौती को हिंदी आलोचना में नामवर सिंह और मैनेजर पांडे ने स्वीकार किया तथा छायावाद, नई कविता, मुक्तिबोध और साहित्य के इतिहास दर्शन से संबंधित विभिन्न विषयों पर एक समानांतर विचार प्रस्तुत किया।

समग्र रूप में रामविलास शर्मा के आलोचना कर्म के संबंध में कहा जा सकता है कि वे विस्तार और गहराई की दृष्टि से अप्रतिम हैं। अपने मौलिक चिंतन तथा लोकबद्ध मान्यताओं के कारण प्रगतिशील समीक्षा की धुरी बन जाते हैं। उनकी आक्रामक शैली कहीं-कहीं औदात्य का अतिक्रमण अवश्य करती है, किंतु जटिल से जटिल बात को सरलतम शब्दों में ओजपूर्ण प्रवाह के साथ कहने की उनकी क्षमता मौलिक है। उनसे विद्वानों की सहमति हो या न हो किंतु उनकी मान्यताओं से जूझे बिना आलोचना का विकास संभव नहीं है।

संदर्भ :

1 राम विलास शर्मा अपनी धरती अपने लोग, खण्ड एक किताब घर प्रकाशनए नई दिल्ली; प्रथम संस्करण, 1996, पृ05

2 वही, पृ0 61

3 राम विलास शर्मा अपनी धरती अपने लोग, खण्ड एक, किताब घर प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1996, पृ0 6-7 पर उद्धृत।

4 वही, पृ०- 7

5 राम विलास शर्मा अपनी धरती अपने लोग, खण्ड एक, किताब घर प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1996, पृ0 8 पर उद्धृत।

6 आलोचना रामविलास शर्मा- संपा0 नत्थन सिंह, विभूति प्रकाशन नई दिल्ली, 1984ए पृ0 31

7 रामविलास शर्मा-अपनी धरती अपने लोग, खण्ड तीन पृ0 18

8 वही पृ0 18 पर उद्धृत।

9 वही पृ॰ 1

10 रामविलास शर्मा-अपनी धरती अपने लोग, खण्ड तीन पृ0 8

11 वही0 पृ0 6

12 आलोचक रामविलास शर्मा- संपा0 नत्थन सिंह, पृ0 37-38

13 रामविलास शर्मा-अपनी धरती अपने लागे, खण्ड एक, पृष्ठ 107

14 आजकल, 'सितम्बर 94 पृ0 9 पर उद्धृत

15 रामविलास शर्मा, 'प्रगति और परम्परा' किताब महल, इलाहाबाद, पृष्ठ 48

16 'आलोचक रामविलास शर्मा'-संपा॰ नत्थन सिंह, पृ0 139 पर उद्धृत